UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –55-57

"जीवन मूल्य और वर्तमान भारतीय शिक्षा"

डॉ. पवन कुमार मित्तल
(सहायक प्राध्यापक, रेनेसा कॉलेज ऑफ कॉमर्स एण्ड मेनेजमेंट)

सारांश :–
जब से मानव सभ्यता का विकास हुआ है, तब से भारत अपनी शिक्षा एवं दर्शन के लिए विश्वविख्यात रहा है। यह भारतीय शिक्षा एवं उसमें समाहित जीवन मूल्यों का ही चमत्कार है कि भारतीय संस्कृति ने इस पूरे विश्व का सदैव पथ प्रर्दशन किया है और आज भी जीवित है। वैश्वीकरण और निजीकरण के इस दौर में भी शिक्षा शास्त्रियों द्वारा लगातार इस बात का प्रयास किया जा रहा है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल धन प्राप्ति न होकर मानव सेवा भी रहे। इसलिए वर्तमान शिक्षा पद्धति के माध्यम से छात्रों में जीवन मूल्यों के विकास का प्रयास निरन्तर किया जा रहा है। भारत में उच्चशिक्षा के क्षैत्र में विगत कुछ वर्शों में कई विदेशी संस्थाओं द्वारा प्रवे ा किया गया है एवं कई संस्थाए आने को तैयार हैं। प्राचीन काल से ही भारतीय दा ार्निकों का यह अटल वि वास रहा है कि केवल अक्षर ज्ञान ही ि ाक्षा नहीं है वरन् छात्रों के मन में नैतिक भावनाओं को विकसित कर उनके चरित्र का निर्माण अत्यंत आव यक है। आत्मावि वास, विवेक एवं नैतिक मूल्यों से ओतप्रोत उच्च ि ाक्षित युवा न केवल अपने परिवार बल्कि समाज एवं राष्ट्र के सर्वांगिण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करता है।
कुँजी शब्द :– *जीवन मूल्य, संस्कृति, ि ाक्षा पद्धति, ओतप्रोत*

प्रस्तावना :–
शिक्षा का अर्थ है विद्या एवं ज्ञान का अर्जन, हस्तांतरण तथा प्र ि ाक्षण। वेद के छः अंगों में से शिक्षा का स्थान प्रथम है। आज एक ऐसी ि ाक्षा प्रणाली की आव यकता है जिससे व्यक्तित्व के सांसारिक एवं परमार्थिक विकास को प्राप्त किया जा सके। ऐसी ि ाक्षा जो धर्मानुकूल, न्यायसम्मत जीवन जीने की प्रेरणा देती हो। ि ाक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों के मध्य नैतिकता तथा आध्यात्मिकता के स्तर को ऊँचा उठाया जा सके। कहना अनुचित नहीं होगा कि आज मानव में हो रहे जीवन मूल्यों के पतन का कारण वर्तमान ि ाक्षा पद्धति के द्वारा केवल आय अर्जन को प्रमुख स्थान प्रदान करना है। यदि समाज में हो रहे पतन को रोकना है तो हमे एक ऐसी ि ाक्षण व्यवस्था को अंजाम देना होगा जा जीवन मूल्यों से ओतप्रोत हो।

"दे ा का भविश्य उसकी कक्षाओं में निर्मित हो रहा है।" वाक्य के साथ कोठारी आयोग द्वारा अपनी रिपोर्ट का प्रारम्भ किया था तथा राश्ट्रीय विकास हेतु ि ाक्षा को मुख्य उद्दे य बताया था। ि ाक्षा व्यक्ति विकास के साथ ही राश्ट्रीय एवं वै ि वक विकास की प्रथम भार्त है।

शोध उद्देश्य
प्रस्तुत भाोधपत्र के प्रमुख उद्दे य निम्न हैं

- भारतीय ि ाक्षा प्रणाली में जीवन मूल्यों के महत्व को ज्ञात करना।
- ि ाक्षा के क्षेत्र में जीवन मूल्यों को और अधिक सुदृढ़ करने हेतु सुझाव प्रदान करना।

शोध प्रविधि एवं समंकों का संकलन :–
प्रस्तुत भाोध पत्र में विभिन्न प्रकाशित लेखों, भाोध पत्रों, संदर्भ ग्रंथों, समाचार पत्र, पत्र पत्रिकाओं तथा इंटरनेट आदि से संग्रहित द्वितियक समंकों का उपयोग किया गया है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –55-57

साहित्य समीक्षा :–

श्री मनोज कुमार दास एवं करीना भाटिया द्वारा (दिसम्बर 2010) के भोधपत्र में स्पश्ट किया है कि दे ा के आर्थिक, सामाजिक विकास के लिए मूल्य आधारित उच्च ि ाक्षा का होना अत्यंत आव यक है। श्री पवन अग्रवाल द्वारा "भारत में उच्च ि ाक्षा : परिवर्तन की आव यकता" (जून 2006) में यह बताया गया है कि वर्तमान भारतीय उच्च ि ाक्षा पद्धति में कुछ कमियाँ हैं जिनके कारण स्नातक तो हो रहे हैं लेकिन वे बेराजगार हैं एवं वे विभिन्न क्षेत्रों से उठ रही कु ाल मानवभाक्ति की आव यकता हो पूरा नहीं कर पा रहे हैं। प्रो. डी.एन तिवारी (बनारस हिन्दू वि वविद्यालय) के लेख "उच्च ि ाक्षा में मूल्य" में उच्च ि ाक्षा के क्षेत्र में जीवन मूल्यों की समीक्षा की गई है।

जीवन मूल्य और वर्तमान भारतीय शिक्षा :–

यह सत्य है कि ि ाक्षा के क्षेत्र में निरन्तर कई प्रयोग किये जा रहे हैं, और यह क्षेत्र आज कई विसंगतियों एवं समस्याओं से जूझ रहा है। अभिभावक भी आज भ्रमित हैं, वे यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि क्या महंगी दर पर प्राप्त की गई ि ाक्षा ही उचित है या सामान्य व्यय पर भी एक श्रेश्ठ ि ाक्षा का अर्जन किया जा सकता है। आज महंगे ि ाक्षण संस्थाओं में अपनी संतान को प्रवे ा दिलाना एक स्टेट्स सिंबल बन गया है। पालकों द्वारा अपनी संतान को येन–केन प्रकरेण इन्हीं संस्थाओं में प्रवे ा दिलाने का प्रयास किया जा रहा है।

बटेण्ड रसेल ने तो यह तक कह दिया था "**पब्लिक स्कूल बच्चे को बन्दूक की नोक तथा अपनी पाश्विक प्रवृत्तियों के आधार पर कार्य करना सिखाते हैं।**" एक तरफ गुणों का विकास होता है, तो दूसरी तरफ विद्यार्थी के मन में दंभ, उच्च भावना जैसी प्रवृत्तियों का विकास हो जाता है। कई बार विभिन्न संसाधनों से पूर्ण ऐसे विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त संसाधनों एवं सुविधाओं का दुरूपयोग किया जाता है। कुछ द ाओं में ऐसे विद्यार्थियों द्वारा अपने पालकों के रूतबे का प्रयोग दूसरों पर रौब झाड़ने के लिये किया जाता है। ि ाक्षण संस्थाओं का प्रबंध कई मर्तबा ऐसे विद्यार्थियों के पालकों के रूतबे से भयभित होता है, और वह छात्रों के नैतिक अवमूल्यन को जान–बूझकर अनदेखा कर देता है जो दे ा और समाज के लिए घातक है।

कई दफा महंगे ि ाक्षण संस्थानों से ि ाक्षा प्राप्त विद्यार्थी जब वास्तविक दुनिया में कदम रखता है तब उसे जीवन की सच्चाई का एहसास होता है, और वह स्वयं को ठगा सा महसूस करता है। कई दफा विभिन्न संसाधनों के अभाव में सरकारी संस्थानों में हिन्दी माध्यम से ि ाक्षा प्राप्त विद्यार्थी भी जीवन में सफलता के कई मुकाम हासिल करता है।

आज समाज में हो रहे जीवन मूल्यों के पतन का एक प्रमुख कारण ि ाक्षा का दि ाहीन होना भी है। बाजारीकरण से प्रभावित ि ाक्षा पद्धति के कारण आज का मानव वर्तमान के प्रति अक्रान्त है तो भविश्य को लेकर आभांकित और भ्रमित है। ऐसी परिस्थितियों में जरूरत है जीवन मूल्यों से ओत–प्रोत और आधुनिकीकरण के समन्वय वाली ि ाक्षा की जो मानव को उसका महत्व समझा सके। आज जरूरत है ऐसी ि ाक्षण व्यवस्था की जो हमारी प्राचीन परम्पराओं, जीवन मूल्यों, नैतिकता के साथ ही आधुनिकीकरण का समागम हो। ऐसी ि ाक्षण व्यवस्था के द्वारा ही एक सुनहरे एवं खुशहाल भविश्य की कल्पना की जा सकती है।

सुझाव

जीवन मूल्यों को ि ाक्षा व्यवस्था में सुदृढ़ता से स्थापित करने हेतु निम्नलिखित प्रयासों को किया जाना प्रासांगिक है

1. वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि उच्च ि ाक्षित युवा अनेक अनैतिक गतिविधियों में संलग्न पाये जाते हैं । अतः ि ाक्षित व्यक्तियों मे हो रहे नैतिक पतन को ध्यान में रखते हुए एक ऐसी ि ाक्षण पद्धति का विकास करना चाहिए जो छात्रों में ज्ञान के साथ ही जीवन मूल्यों को भी गहराई से स्थापित कर सके ।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –55-57

2. ि ाक्षा के द्वारा ऐसे मूल्यापरक वातावरण का निर्माण द्वारा हो जो विद्यार्थियों में ज्ञान के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करे, उसकी मनोवृत्तियों का निर्माण करे ताकि वह जीवन के विषय में सही एवं स्वस्थ सोच के साथ निर्णय ले सके ।
3. सरकार को चाहिए कि वह आर्थिक रूप से पिछड़े तबके के लिए चाहे वह किसी भी जाति वर्ग का हो मुफ्त ि ाक्षा की व्यवस्था करे ।
4. भारत में ि ाक्षा को नियंत्रित एवं निर्दे ि ात करने वाली प्रमुख संस्थाओं को चाहिए कि वह ि ाक्षा के माध्यम से जीवन मूल्यों एवं नैतिकता को विद्यार्थियों के मन में गहराई से रोपित करने की व्यवस्था हेतु विभिन्न कमेटियों का गठन करे एवं उनके द्वारा दिये गये सुझावों पर ि ाघ्रता से अमल करे ं।

डपसंहार

आज जीवन मूल्य, नैतिक ि ाक्षा एवं आधुनिक ज्ञान एवं विज्ञान से भरी एक ऐसी ि ाक्षण व्यवस्था की आव यकता है जो उपलब्ध संसाधनों का युक्तिपूर्ण उपयोग कर असीम विकास संभावनाओ का पहचान सके । इस तरह अर्जित ज्ञान का उपयोग वि वहित, राष्ट्रहित, समाजहित एवं अंत में स्वहित के लिए करे । जीवन मूल्यों के ि ाक्षा में समावे ा द्वारा वर्तमान ि ाक्षा प्रणाली में ऐसे बदलाव लाना जो समाज कल्याण में सहायक हो ताकि विक्षुब्ध होकर किसी कवि को यह ना कहना पड़े "ि ाक्षे तुम्हारा ना ा हो, जो नौकरी हित ही बनी"

संदर्भ ग्रंथ

1. वेल्यू इन हायर एज्युके ान – प्रका ि ात लेख
   प्रो. डी.एन. तिवारी, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय
2. शोधपत्र ' वेल्यु इन हायर एज्युके''ान – नीड एण्ड इम्पोर्टेन्स
   डॉ. अनुराधा सिंघ्वानी एवं डॉ. राजीवकुमार – फरवरी 2013
3. शोधपत्र – ए डिमाण्ड ऑफ वेल्यू बेस्ड एज्युके ान सीस्टम इन इंडिया – ए कम्परेटिव स्टडी
   करीना भाटिया एवं मनोजकुमार दास – दिसम्बर 2010
4. शोधपत्र – "भारत में उच्च ि ाक्षा : परिवर्तन की आव यकता"
   श्री पवन अग्रवाल – (जून 2006)
5. http://www.bharatiyashiksha.com
6. www.google.com
7. http://hi.vikaspedia.in
8. http://asbmassindia.blogspot.in